जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

कोटा

Rashtradoot

फोनः- 2386031, 2386032 फैक्सः- 0744-2386033 वर्षः 47 संख्याः 325 प्रभात कोटा, बुधवार 7 सितम्बर, 2022 कोटा/24/2012-14 पृष्ठ 8 मूल्य 1.20 रु.

केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 सितम्बर। कांग्रेस महासचिव तथा मुख्य प्रवक्ता जयराम रमेश ने मोदी सरकार के बेतुके सिक्योरिटी सिस्टम पर कड़ा प्रहार करते हुये कहा है कि सरकार ने भारतीय हवाई अड्डों पर सैन्ट्रल इन्डस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स (सी.आई.एस.एफ.) के 3000 पदों को समाप्त करने तथा उनके स्थान पर प्राइवेट सिक्योरिटी तैनात करने का निर्णय लिया है।

- केन्द्र सरकार के केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल को एयरपोर्ट की सुरक्षा से हटाकर संघ कार्यालय व अंबानी, अडानी की सुरक्षा में तैनात करने के फैसले की कांग्रेस ने कड़ी आलोचना की।

उन्होंने ट्वीट किया, लेकिन ''हमारे दो'' तथा आर.एस.एस. की सहूलियतों के संरक्षण के लिये सी.आई.एस.एफ. ही है। सरकारी सम्पत्तियों (की सुरक्षा) के लिये प्राइवेट सिक्योरिटी तथा प्राइवेट हस्तियों (की सुरक्षा) के लिये सरकारी सिक्योरिटी।'' वस्तुतः

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'मैं किसी का पोता, बेटा, भाई, किसी का भतीजा हूँ, सब का मुझ पर आशीर्वाद और सबसे आत्मीय रिश्ता'

हजारों की संख्या में बधाई देने उमड़ी भीड़ का यह कहकर अभिवादन किया सचिन पायलट ने

जयपुर, 6 सितम्बर (का.प्र.)। राजस्थान के पूर्व उप मुख्यमंत्री सचिन पायलट के जन्मदिन से 1 दिन पहले जयपुर में सिविल लाइन्स स्थित उनके सरकारी आवास के बाहर बधाई देने के लिए हुजूम उमड़ पड़ा। सिविल लाइन्स में सचिन पायलट को बधाई देने वालों में खास बात यह रही कि, जहां पायलट कैम्प के मंत्री- विधायक तो मौजूद थे ही, वहीं, अब तक अशोक गहलोत कैम्प में दिखने वाले सात विधायक भी सचिन पायलट को बधाई देने सिविल लाइन पहुंचे।

इस मौके पर सचिन पायलट ने भी किसी को निराश नहीं किया और बड़ी आत्मीयता से सबसे मिलकर बधाइयाँ स्वीकार कीं। इस दौरान पायलट ने कहा, ''आज मेरे पास कोई पद नहीं है और साधारण विधायक हूँ लेकिन मैं राजस्थान से आए इन चाहने वालों में किसी का पोता, किसी का बेटा, किसी का भाई, किसी का भतीजा हूँ और इन सब लोगों का आशीर्वाद और प्यार ही है, जो मुझे हमेशा ताकत देता है। राजनीतिक जीवन में जरूरी है कि आप आत्मीयता के संबंध कायम कर सकें और आज दूर-दूर से जिस तरह से लोग आए हैं, वह आत्मीयता का ही संबंध है। लोगों का मुझ पर आशीर्वाद है और मैं चाहता हूँ कि इस आशीर्वाद को कायम रख सकूं।''

सचिन पायलट के जन्मदिन से एक दिन पहले जयपुर में उनके सिविल लाईन्स स्थित आवास के बाहर बधाई देने के लिए समर्थकों का हुजूम उमड़ पड़ा।

- डूंगरपुर, जालौर, बाड़मेर, जैसलमेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ से भी आई भारी भीड़।
- चारों तरफ से आ रही भारी भीड़ के कारण सोडाला से अजमेर पुलिया, हवा सड़क से सहकार मार्ग और सी स्कीम में वाहन रेंगते रहे।

जन्मदिन पर हुए इस जलसे के दौरान हालत यह रहे कि, भारी भीड़ के कारण सोडाला से लेकर अजमेर पुलिया और मिशन कंपाउंड तक, हवा सड़क से लेकर 22 गोदाम सर्किल, सहकार मार्ग कई घंटों तक जाम रहे या वाहन रेंग-रेंग कर चलते रहे। सचिन पायलट को बधाई देने के लिए दूरदराज से आने वाले लोगों को भी अपने वाहन काफी दूर खड़े करके पैदल पहुंचना पड़ा। पुलिस को भी भारी भीड़ को नियंत्रित करने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। सिविल लाइन्स स्थित राजभवन रोड की हालत तो यह थी कि, एक बार भी भीड़ कहीं भी कम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नीतीश की सद्भावना यात्रा

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 सितम्बर। आज बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बहुत व्यस्त रहे। कल कांग्रेस नेता राहुल गांधी से भेंट करने के बाद, आज उन्होंने वामपंथी नेताओं- सीताराम येचुरी तथा डी. राजा से अलग-अलग भेंट की। इससे भी बड़ी बात यह रही कि उन्होंने दिल्ली के मुख्यमंत्री तथा आप नेता अरविंद केजरीवाल से भी बातचीत की।

अभी कुमार की सूची में अन्य

- दिल्ली की अपनी यात्रा में नीतीश पहले तो राहुल गांधी से मिलने गये उनके निवास पर, फिर, सभी राजनीतिक पार्टियों के दफ्तर व नेताओं से भी भेंट की।

नेताओं के साथ मीटिंग करना भी शेष है। अभी वे अन्य नेताओं के अलावा, आई.एन.एल.डी. नेता ओम प्रकाश चौटाला तथा जे.डी.एस. नेता कुमार स्वामी के साथ भी मीटिंग करेंगे।

बिहार में सरकार के बदलने के बाद, यह बात दिन-पर-दिन स्पष्ट होती जा रही है कि नीतीश कुमार अब स्वयं को राष्ट्रीय भूमिका में मानकर चल रहे हैं। लेकिन उनकी इन मीटिंगों के चलते, मीडिया में यह

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

...ऐसी जली कि, कोयला बनी न राख

गहलोत नये-नये प्रस्ताव भेज रहे हैं हाई कमान को, सचिन पायलट को मु.मंत्री बनने से रोकने के लिये

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 सितम्बर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने यह कोशिश करने एवं सुनिश्चित करने के अपनी सारी ताकत लगा दी है कि सचिन पायलट राजस्थान के मुख्यमंत्री न बन पाये।

बताया जाता है कि उन्होंने गांधी परिवार से कह दिया है कि उनकी पसंद एंव विश्वास का आदमी ही मुख्यमंत्री बनना चाहिये (जिसका सीधा अर्थ निकलता है कि यह मैं तय करूँगा कि मुख्यमंत्री कौन बने) या फिर उन्हें मुख्यमंत्री तथा कांग्रेस अध्यक्ष-दोनों ही पदों पर बना रहने दिया जाये। मुख्यमंत्री के नज़दीकी सूत्रों का कहना है कि यह सुनिश्चित करने के लिये कि पायलट मुख्यमंत्री की कुर्सी पर न बैठ पायें, वे (गहलोत) कुछ भी कर गुजरेंगे तथा किसी भी बिन्दु पर नहीं रूकेंगे। इसका एक छोटा सा ट्रेलर आज जयपुर में प्रत्यक्षता: देखने को मिला।

- 24 सितम्बर को कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव के लिये आवेदन आने शुरू होंगे तथा 9-10 सितम्बर को सोनिया गांधी विदेश से लौटेंगी, तभी कांग्रेस के अध्यक्ष पद की गुत्थी सुलझेगी तथा राजस्थान के मु.मंत्री पद का मामला अन्ततोगत्वा सुलटेगा।

कल, 7 सितम्बर को सचिन पायलट का जन्मदिन है लेकिन उनका जन्मोत्सव आज ही मना लिया गया, क्योंकि वे आज शाम ही कन्याकुमारी की दो दिन की यात्रा पर चले गये ताकि वहाँ वे राहुल गाँधी की भारत जोड़ो पद यात्रा में शामिल हो सकें।

इधर अशोक गहलोत यहाँ अपने असली रंग में आ गये तथा उनके निर्देशानुसार, सारे पोस्टर तथा होडिंग रातों-रात फाड़ दिये गये या हटा दिये गये।

यह बिल्कुल अलग बात है कि उत्साही समर्थकों ने सुबह ही दोगुनी संख्या में पोस्टर एवं होडिंग फिर लगा दिये।

अपने नेता को शुभकामना देने के लिये, पूरे राज्य से आये पायलट-समर्थकों से जयपुर भीड़ से अवरूद्ध हो गया था।

लेकिन प्रशासन ने पायलट के आवास के पास बैरिकेड लगा दिये थे, जिसके कारण लोगों को उनके आवास तक पहुँचने में मुश्किलें आई क्योंकि उन्हें पैदल चलना पड़ा था। लेकिन बात यही नहीं रूकी।

गहलोत-प्रशासन ने सिविल लाइन्स तथा आस-पास क्षेत्र की इन्टरनेट सेवाएं बन्द कर दीं, ताकि सीधा टेलीकास्ट, ब्रॉडकास्ट तथा पायलट के जन्म दिन पर उन्हें शुभकामनाएं देने आई विशाल भीड़ के बीच सन्देशों का आदान प्रदान न हो सके।

एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि जहाँ तक सचिन पायलट का मामला है, अशोक गहलोत अत्यधिक असुरक्षित, प्रतिशोधात्मक, छोटे तथा तुच्छ सोच वाले प्रतीत हो रहे हैं। प्रश्न यह है कि जब अशोक गहलोत पायलट के खिलाफ एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं तथा सब कुछ खुले आम कर रहे हैं, तो गांधी परिवार सचिन पायलट को मुख्यमंत्री कैसे बना पायेगा।

कांग्रेस अध्यक्ष पद के चुनाव के नामांकन 24 सितम्बर को शुरू होंगे तथा सोनिया गांधी के 9-10 सितम्बर को भारत लौटने की उम्मीद है। उनके आने के बाद ही, राजस्थान के मुद्दे पर अन्तिम एवं निर्णायक चर्चा होगी।

गांधी परिवार के सामने अशोक गहलोत के रूप में एक बहुत बड़ा सिरदर्द है तथा वरिष्ठ नेताओं का कहना है कि गांधी परिवार ने इतना बड़ा ग्रास ले लिया है कि उनसे चबाते नहीं बन रहा।

चुनाव आयोग

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 सितम्बर। न्यायमूर्ति अजय रस्तोगी तथा वी. नागरत्ना की सर्वोच्च न्यायालय बैंच ने कहा है कि मुख्य चुनाव आयुक्त तथा दो चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति में ''सरकार की सनकों तथा मनमानी'' को रोकने की अधिकारिक घोषणा बड़ी बैंच ही करेगी।

- चुनाव आयोग की नियुक्तियों में मनमानी रोकने की मांग करने वाली याचिका की सुनवाई के लिए सुप्रीम कोर्ट ने वृहद् बैंच गठित की।

बैंच ने एक पी.आई.एल. पर सोमवार को केन्द्र को नोटिस जारी कर दिया। याचिका में कहा गया था कि ये नियुक्तियाँ असंवैधानिक हैं तथा चुनाव आयोग की स्वतंत्रता एवं चुनाव प्रक्रिया की तटस्थता को कमजोर करने वाली हैं। एक एन.जी.ओ. ''एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स'' (ए.डी.आर.)

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

स्टालिन कोई कसर नहीं छोड़ रहे राहुल के स्वागत में

वे राहुल को तिरंगा झण्डा भेंट करेंगे, ''भारत जोड़ो यात्रा'' के शुभारम्भ के अवसर पर

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 सितम्बर। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन, जिन्होंने दिल्ली के मुख्यमंत्री एवं आप पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल की कल ही मेजबानी की थी, अपने गठबंधन सहयोगी एवं कांग्रेस नेता राहुल गांधी को कल कन्याकुमारी में राष्ट्रीय ध्वज सौंपेगे और भारत जोड़ो पदयात्रा में भाग लेंगे। यह पदयात्रा कन्याकुमारी से ही शुरू होगी और 3 हजार 570 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय कर कश्मीर तक जाएगी।

स्टालिन का कन्याकुमारी में एक रैली को संबांधित करने का भी कार्यक्रम है, जहां वह राहुल गांधी को राष्ट्रीय ध्वज सौंपेंगे। यद्यपि उम्मीद के मुताबिक कांग्रेस और खासतौर पर राहुल गांधी को स्टालिन का समर्थन अपने सहयोगी के प्रति प्रतिबद्धता के संदर्भ में तमिलनाडु और देश के मतदाताओं को एक मैसेज देने के लिए महत्वपूर्ण है। समय-समय पद चलती अटकलों के बीच, जिसमें लोग कभी-कभी वास्तविक जैसा अर्थ भी लगा लेते है और संदेह व्यक्त करते हैं कि क्या डी.एम.के. (द्रमुक) भी समय विशेष में भाजपा के पाले में तो नहीं

- स्टालिन उस समारोह में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं व नेताओं को संबोधित भी करेंगे।
- अपने इस व्यवहार से वे राहुल को आश्वस्त कर देना चाहते हैं कि, हाल ही में उन्होंने बनर्जी व केजरीवाल का भी स्वागत किया था, पर, वे मूलतः दिल से कांग्रेस व राहुल के साथ ही हैं।
- स्टालिन का यह सोच राहुल को तो बहुत भा रहा है, पर, सच यह भी है कि, स्टालिन का यह आचरण अपनी तमिलनाडु की जनता को लुभाने के लिये है। यहाँ की जनता भाजपा को भी उत्तर भारत की, हिन्दी वादी पार्टी मानती है, अतः स्टालिन का भाजपा विरोधी व कांग्रेस समर्थक आचरण काफी भा रहा है, तमिलनाडु की जनता को।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

गिरगिटों का है जमाना!

भारत में नीतीश व ममता इस राजनीतिक सोच (गिरगिट वाद) के कट्टर व प्रबलतम अनुयायी हैं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 सितम्बर। यह तो ठीक है कि ब्रिटेन को नया प्रधानमंत्री मिल गया है, लेकिन इसके ये मायने भी हैं कि इस देश ने अपना वास्तविक रंग दिखा दिया है। प्रधानमंत्री के चयन में दक्षिणपंथ का पूर्ण बोलबाला रहा। नईप्रधानमंत्री 1 प्रतिशत से भी कम ब्रिटिश वोटर्स के समर्थन से जीती हैं: यानी कि कंज़रवेटिव पार्टी के सदस्यों से करीब 20 हजार अधिक समर्थकों के वोट से।

लिज़ ट्रस ब्रिटेन की महारानी से मिलने स्कॉटलैण्ड गई हैं। महारानी वर्तमान में यहां गर्मियों की छुट्टियां बिता रही हैं और ब्रिटेन की आगामी प्रधानमंत्री से बकिंघम पैलेस में भेंट करने के लिए लंदन आने में असमर्थ हैं।

विडम्बना यह है कि लिज़ ट्रस ने ब्रिटिश राजशाही के उन्मूलन के लिए कभी कैंपेन चलाया था। तब उन्होंने कहा था ''हम यह बहुत बर्दाश्त कर चुके हैं।''

- ब्रिटेन की नव नियुक्त प्र.मंत्री लिज़ ट्रस ने ब्रिटेन की पूर्व कॉलोनियों के चतुर राजनीतिज्ञों द्वारा प्रतिपादित ''गिरगिट वाद'' का सबक पूरी तरह सीख लिया है।
- वे एक जमाने में ब्रिटेन की पुरानी ''इंग्लिश मॉनार्की'' की व्यवस्था के सख्त खिलाफ थीं, पर, प्र.मंत्री बनते ही वे स्कॉटलैंड गईं, महारानी एलिज़ाबेथ से शुभकामना लेने।
- जब ट्रस ने अपना प्र.मंत्री बनने का अभियान शुरू किया था, वे पूर्णतया ब्रिटेन का मार्केट पूरी तरह से खोलने के खिलाफ थीं, पर, अभियान के अंत वे पूर्ण तथा ''फ्री ट्रेड'' की वकालत करने लगी थीं।
- जब वे ऑक्सफोर्ड में पढ़ रही थी, तब वो उदारवादी व प्रजातंत्रीय व्यवस्था की वकालत करती थीं, और उनकी दलील थी कि, ब्रिटेन को ''इमिग्रेशन पॉलिसी'' और उदारवादी करनी चाहिये, जिससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभा को आकर्षित कर सके इंग्लैंड। पर, राजनीति में आने के बाद वे और सख्त ''इमिग्रेशन पॉलिसी'' लाने का पक्ष लेने लगी थीं, जिससे ब्रिटेन में आने वाले लोगों को हतोत्साहित किया जा सके।
- वे कॉलेज के दिनों में ब्रिटेन के यूरोपीय साझा बाजार में बने रहने का पक्ष लेती थीं, और बाद में उन्हें ब्रिटेन के साझा बाजार से अलग होने में ज्यादा लाभ ज्यादा नज़र आने लगा था।

वे अब इससे मुकर गई हैं, लेकिन पार्टी के पुराने वाइट और राइट विंग सदस्यों के समक्ष इस बात को हाईलाइट करने में टीकाकारों को काफी मशक्कत करनी पड़ी। यह तथ्य पार्टी के उन अधिक प्रगतिशील, शिक्षित और जानकार सदस्यों के विपरीत है, जिन्होंने ऋषि सुनक का विकल्प चुना था, लेकिन ऋषि सुनक के साथ अंत ना पंत ऐसा होना ही था क्योंकि वे मूलतः अंग्रेज नहीं हैं।

ब्रिटेन की प्रधानमंत्री लिज़ ट्रस अपनी बात से मुकरने में उतनी ही माहिर है, जैसे हर कहीं के राजनेता होते हैं। बिहार के नीतीश कुमार या बंगाल की ममता बनर्जी की भांति लिज़ ट्रस ने प्रधानमंत्री बनने से पूर्व प्रमुख मुद्दों पर दावे के साथ सार्वजनिक रूप से बात कहने के बाद कई बार अपना पैंतरा बदला है।

नीतीश कुमार भाजपा के सहयोग से बिहार के मुख्यमंत्री बने और अब वर्ष 2024 के लोकसभा चुनावों में प्रधानमंत्री पद पर नज़रे गड़ाते हुए उसके सर्वाधिक कट्टर दुश्मन बन चुके हैं। ममता बनर्जी ने आर.एस.एस. का जबर्दस्त विरोध किया था, लेकिन उन्हें अब महसूस हो रहा है कि आर.एस.एस. में अच्छे लोग थे, जिन्होंने समाज सेवा की।

ब्रिटेन की पूर्व विदेश मंत्री लिज़ ट्रस को अपनी राजनीति की खातिर रंग बदलने के कारण ''राजनीतिक गिरगिट'' की संज्ञा दी गई

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'सहकार से समृद्धि'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 सितम्बर। पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरेश प्रभाकर प्रभू को नई राष्ट्रीय सहकारी नीति का प्रारूप तैयार करने के लिए गठित पैनल का अध्यक्ष बनाया गया है। यह प्रारूप 2002 से चली आ रही मौजूदा राष्ट्रीय सहकारी

- केन्द्र सरकार ने नई राष्ट्रीय सहकारी नीति बनाने के लिए पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुरेश प्रभू के नेतृत्व में एक पैनल गठित किया।

नीति का स्थान लेगा। इस पैनल, जिसमें 47 सदस्य होंगे, का गठन केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने किया है।

पैनल में देश के सभी भागों से सदस्य मनोनीत किए जाएंगे जो सहकारी क्षेत्र के विशेषज्ञ होंगे और राष्ट्रीय, राज्य स्तरीय व जिला एवं राज्यों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)